eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 03, March 2026

भारत की विदेश नीति और बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था, सामरिक स्वायत्तता, वैश्विक भूमिका और समकालीन चुनौतियों का अध्ययन

डा0 अरविन्द कुमार शुक्ल[1]

[1]एसोसिएट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान, राजकीय महिला स्ना0 महाविद्यालय बिंदकी, फतेहपुर उ0प्र0, भारत

Received: 21 March 2026 Accepted & Reviewed: 25 March 2026, Published: 31 March 2026

Abstract

वर्तमान अंतरराष्ट्रीय राजनीति तीव्र परिवर्तन के दौर से गुजर रही है, जहाँ एकध्रुवीय विश्व व्यवस्था का स्थान धीरे–धीरे बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था लेती जा रही है। इस उभरती व्यवस्था में संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन, रूस, यूरोपीय संघ, भारत तथा अन्य क्षेत्रीय शक्तियाँ वैश्विक शक्ति–संतुलन को नए रूप में परिभाषित कर रही हैं। भारत, एक उभरती हुई वैश्विक शक्ति के रूप में, अपनी विदेश नीति को बदलते अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य के अनुरूप पुनर्संरचित कर रहा है। भारत की विदेश नीति की प्रमुख विशेषता उसकी सामरिक स्वायत्तता, बहुपक्षीय प्रतिबद्धता, क्षेत्रीय संतुलन, तथा वैश्विक दक्षिण के प्रतिनिधि के रूप में उसकी भूमिका में निहित है। यह अध्ययन बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था के संदर्भ में भारत की विदेश नीति के स्वरूप, उद्देश्यों, चुनौतियों और संभावनाओं का विश्लेषण करता है। शोध में इस बात पर विशेष ध्यान दिया जाएगा कि भारत किस प्रकार अमेरिका, रूस, चीन, यूरोप, इंडो–पैसिफिक क्षेत्र तथा दक्षिण एशिया के साथ अपने संबंधों को संतुलित करते हुए एक स्वायत्त और प्रभावी विदेश नीति का निर्माण कर रहा है। साथ ही, अध्ययन भारत की विदेश नीति में आर्थिक कूटनीति, सामरिक साझेदारियाँ, ऊर्जा सुरक्षा, रक्षा सहयोग, जलवायु परिवर्तन, वैश्विक शासन संस्थाओं में सुधार, तथा क्षेत्रीय स्थिरता जैसे आयामों की भी समीक्षा करेगा। यह शोध गुणात्मक पद्धति पर आधारित होगा, जिसमें पुस्तकों, शोध–पत्रों, सरकारी दस्तावेजों, नीति–पत्रों तथा अंतरराष्ट्रीय रिपोर्टों का विश्लेषण किया जाएगा। अध्ययन का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में भारत केवल एक सहभागी शक्ति नहीं, बल्कि एक संभावित निर्णायक शक्ति के रूप में उभर रहा है। निष्कर्षतः यह शोध दर्शाएगा कि भारत की विदेश नीति अब परंपरागत गुटनिरपेक्षता से आगे बढ़कर सामरिक स्वायत्तता, बहु–संरेखण, और वैश्विक नेतृत्व की दिशा में विकसित हो रही है।

मुख्य शब्द– भारत की विदेश नीति, बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था, सामरिक स्वायत्तता, बहु–संरेखण, अंतरराष्ट्रीय राजनीति, वैश्विक शक्ति–संतुलन, भारत–अमेरिका संबंध, भारत–चीन संबंध, वैश्विक दक्षिण, इंडो–पैसिफिक, ब्रिक्स, जी–20, कूटनीति.

Introduction

समकालीन अंतरराष्ट्रीय राजनीति एक गहरे संक्रमणकाल से गुजर रही है। शीत युद्ध की समाप्ति के बाद जिस एकध्रुवीय विश्व व्यवस्था में संयुक्त राज्य अमेरिका की प्रधानता स्पष्ट रूप से दिखाई देती थी, वह अब धीरे–धीरे बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में परिवर्तित होती प्रतीत हो रही है। वर्तमान समय में वैश्विक शक्ति–संतुलन का केंद्र केवल एक महाशक्ति तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि अमेरिका, चीन, रूस, यूरोपीय संघ, भारत, जापान तथा अन्य क्षेत्रीय शक्तियाँ भी अंतरराष्ट्रीय राजनीति, अर्थव्यवस्था, सुरक्षा और कूटनीति को प्रभावित कर रही हैं। इस प्रकार विश्व राजनीति में शक्ति, हित और प्रभाव के अनेक केंद्र उभर रहे हैं, जिनके कारण वैश्विक व्यवस्था अधिक जटिल, प्रतिस्पर्धी और अंतर्संबद्ध बनती जा रही है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 03, March 2026

बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था का उदय केवल शक्ति–संतुलन का प्रश्न नहीं है, बल्कि यह अंतरराष्ट्रीय संबंधों के स्वरूप, कूटनीतिक रणनीतियों, आर्थिक साझेदारियों, क्षेत्रीय गठबंधनों तथा वैश्विक शासन संस्थाओं की कार्यप्रणाली में भी व्यापक परिवर्तन का संकेत देता है। आज जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा सुरक्षा, समुद्री सुरक्षा, आतंकवाद, साइबर खतरों, आपूर्ति श्रृंखला, खाद्य संकट, तकनीकी प्रतिस्पर्धा तथा क्षेत्रीय संघर्ष जैसे मुद्दे विश्व राजनीति के केंद्र में हैं। ऐसी स्थिति में प्रत्येक राष्ट्र को अपनी विदेश नीति को बदलते वैश्विक परिदृश्य के अनुरूप पुनर्परिभाषित करना पड़ रहा है। भारत भी इस परिवर्तन से अछूता नहीं है; बल्कि एक उभरती हुई शक्ति के रूप में वह इस नई विश्व व्यवस्था का महत्वपूर्ण सहभागी और संभावित निर्माणकर्ता दोनों है।

भारत की विदेश नीति ऐतिहासिक रूप से स्वतंत्र निर्णय–क्षमता, शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व, उपनिवेशवाद–विरोध, गुटनिरपेक्षता और विकासोन्मुख अंतरराष्ट्रीय सहयोग जैसे सिद्धांतों पर आधारित रही है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत ने एक ऐसी विदेश नीति का निर्माण किया, जिसका उद्देश्य राष्ट्रीय हितों की रक्षा के साथ–साथ विश्व शांति, न्यायपूर्ण अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था और विकासशील देशों की आवाज़ को सशक्त करना था। शीत युद्ध काल में भारत की गुटनिरपेक्ष नीति उसकी कूटनीतिक पहचान का प्रमुख आधार रही, किंतु शीत युद्धोत्तर काल और विशेषतः इक्कीसवीं सदी में वैश्विक परिस्थितियों में आए बदलावों ने भारत की विदेश नीति को अधिक व्यवहारिक, बहुआयामी और रणनीतिक बना दिया है।

आज भारत की विदेश नीति का केंद्रीय तत्व "सामरिक स्वायत्तता" के रूप में सामने आता है। यह अवधारणा भारत को किसी एक शक्ति–गुट पर निर्भर हुए बिना विभिन्न देशों और मंचों के साथ अपने हितों के आधार पर संबंध स्थापित करने की स्वतंत्रता प्रदान करती है। इसी कारण भारत एक ओर अमेरिका के साथ रक्षा, प्रौद्योगिकी, व्यापार और इंडो–पैसिफिक सहयोग को मजबूत करता है, तो दूसरी ओर रूस के साथ ऐतिहासिक सामरिक संबंधों को बनाए रखता है; साथ ही ब्रिक्स, एससीओ, जी–20, क्वाड, आसियान तथा वैश्विक दक्षिण जैसे विभिन्न मंचों पर भी अपनी सक्रिय उपस्थिति दर्ज कराता है। यह बहु–संरेखण (multi-alignment) की नीति भारत की विदेश नीति के बदलते स्वरूप को स्पष्ट करती है।

बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में भारत की भूमिका अनेक कारणों से महत्वपूर्ण हो जाती है। पहला, भारत विश्व की बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक है और उसकी आर्थिक, तकनीकी तथा जनसांख्यिकीय क्षमता उसे वैश्विक शक्ति बनने की आधारभूमि प्रदान करती है। दूसरा, भारत की भौगोलिक स्थिति हिंद महासागर और इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में अत्यंत रणनीतिक महत्व रखती है। तीसरा, भारत विकासशील देशों, विशेषतः वैश्विक दक्षिण, की आकांक्षाओं और चिंताओं को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर प्रभावी रूप से उठाने की क्षमता रखता है। चौथा, भारत संयुक्त राष्ट्र सुधार, जलवायु न्याय, आतंकवाद–रोधी सहयोग, सतत विकास तथा वैकल्पिक वैश्विक शासन ढाँचे जैसे प्रश्नों पर एक संतुलित और रचनात्मक भूमिका निभाने का दावा करता है।

इसके बावजूद, भारत की विदेश नीति के समक्ष अनेक चुनौतियाँ भी उपस्थित हैं। चीन के साथ सीमा विवाद और सामरिक प्रतिस्पर्धा, दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय संतुलन, पाकिस्तान–प्रेरित सुरक्षा चुनौतियाँ, वैश्विक शक्तियों के बीच बढ़ती प्रतिस्पर्धा, ऊर्जा निर्भरता, समुद्री सुरक्षा, तकनीकी निर्भरता, और रूस–यूक्रेन युद्ध या पश्चिम एशिया के संकट जैसी घटनाएँ भारत की कूटनीतिक संतुलन–क्षमता की परीक्षा लेती हैं। इसके अतिरिक्त, बहुध्रुवीयता का अर्थ केवल अवसर नहीं, बल्कि अधिक जटिल रणनीतिक विकल्प भी है, जहाँ किसी एक पक्ष का खुला समर्थन अन्य संबंधों को प्रभावित कर सकता है। अतः भारत को अपनी विदेश

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 03, March 2026

नीति में आदर्शवाद और यथार्थवाद, सिद्धांत और व्यवहार, क्षेत्रीय हित और वैश्विक भूमिका इन सबके बीच संतुलन स्थापित करना पड़ता है।

इस संदर्भ में "भारत की विदेश नीति और बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था" विषय अत्यंत प्रासंगिक और समकालीन है। यह विषय न केवल अंतरराष्ट्रीय संबंधों के बदलते चरित्र को समझने में सहायक है, बल्कि यह भी स्पष्ट करता है कि भारत किस प्रकार अपने राष्ट्रीय हितों, क्षेत्रीय दायित्वों और वैश्विक आकांक्षाओं के बीच संतुलन बनाकर एक प्रभावशाली शक्ति के रूप में उभर रहा है। यह अध्ययन इस प्रश्न की भी पड़ताल करता है कि क्या भारत केवल बदलती विश्व व्यवस्था के अनुसार स्वयं को ढाल रहा है, अथवा वह सक्रिय रूप से इस नई व्यवस्था के निर्माण में भी भागीदारी कर रहा है।

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था की अवधारणा, उसके प्रमुख आयामों, और उसके संदर्भ में भारत की विदेश नीति के स्वरूप, दिशा, चुनौतियों और संभावनाओं का विश्लेषण करना है। इस अध्ययन में भारत की विदेश नीति के ऐतिहासिक विकास, सामरिक स्वायत्तता, बहु–संरेखण, वैश्विक दक्षिण में नेतृत्व, क्षेत्रीय कूटनीति, इंडो–पैसिफिक रणनीति और प्रमुख वैश्विक शक्तियों के साथ संबंधों का सम्यक् परीक्षण किया जाएगा। साथ ही यह भी समझने का प्रयास किया जाएगा कि भारत की विदेश नीति भविष्य की विश्व राजनीति में किस प्रकार निर्णायक भूमिका निभा सकती है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था भारत के लिए केवल कूटनीतिक चुनौती नहीं, बल्कि एक ऐतिहासिक अवसर भी है। यदि भारत अपनी विदेश नीति में संतुलन, स्वायत्तता, दूरदर्शिता और रणनीतिक स्पष्टता बनाए रखता है, तो वह न केवल अपने राष्ट्रीय हितों की प्रभावी रक्षा कर सकता है, बल्कि वैश्विक राजनीति में एक जिम्मेदार, प्रभावशाली और निर्णायक शक्ति के रूप में स्थापित भी हो सकता है।

1.1 शोध की आवश्यकता (Need of the Study)– वर्तमान समय में अंतरराष्ट्रीय राजनीति के स्वरूप में तीव्र परिवर्तन हो रहे हैं। शीत युद्धोत्तर काल में स्थापित एकध्रुवीय विश्व व्यवस्था अब निरंतर चुनौती का सामना कर रही है और उसके स्थान पर बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था उभरती दिखाई दे रही है। इस बदलते परिदृश्य में शक्ति का वितरण अधिक जटिल, बहुस्तरीय और प्रतिस्पर्धात्मक हो गया है। संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ–साथ चीन, रूस, यूरोपीय संघ, भारत और अन्य क्षेत्रीय शक्तियाँ भी विश्व राजनीति के महत्वपूर्ण केंद्र बनकर उभर रही हैं। ऐसी स्थिति में यह जानना अत्यंत आवश्यक हो जाता है कि भारत जैसी उभरती हुई शक्ति इस नई वैश्विक व्यवस्था में अपनी विदेश नीति को किस प्रकार निर्धारित कर रही है।

भारत की विदेश नीति का अध्ययन इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि भारत अब केवल दक्षिण एशिया तक सीमित शक्ति नहीं रह गया है, बल्कि वह वैश्विक स्तर पर एक प्रभावशाली राष्ट्र के रूप में अपनी पहचान बना रहा है। जी–20, ब्रिक्स, क्वाड, शंघाई सहयोग संगठन, संयुक्त राष्ट्र सुधार, जलवायु न्याय, वैश्विक दक्षिण की आवाज़, समुद्री सुरक्षा, ऊर्जा सुरक्षा, तकनीकी सहयोग और आर्थिक कूटनीति जैसे मुद्दों पर भारत की सक्रिय भूमिका यह संकेत देती है कि उसकी विदेश नीति में नई गतिशीलता और व्यापकता आई है। इस परिवर्तन का गंभीर अकादमिक अध्ययन आवश्यक है, ताकि यह स्पष्ट हो सके कि भारत की विदेश नीति केवल प्रतिक्रियात्मक नहीं, बल्कि सक्रिय, संतुलनकारी और रणनीतिक स्वरूप धारण कर चुकी है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 03, March 2026

इस शोध की आवश्यकता इसलिए भी अनुभव की जाती है कि बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में भारत के समक्ष अवसर और चुनौतियाँ दोनों विद्यमान हैं। एक ओर यह व्यवस्था भारत को सामरिक स्वायत्तता, बहु–संरेखण, आर्थिक विस्तार तथा वैश्विक नेतृत्व के अवसर प्रदान करती है, वहीं दूसरी ओर चीन की आक्रामकता, सीमा विवाद, क्षेत्रीय अस्थिरता, शक्ति–संतुलन की राजनीति, वैश्विक संघर्ष, ऊर्जा निर्भरता तथा तकनीकी प्रतिस्पर्धा जैसी चुनौतियाँ भी सामने रखती है। इन परिस्थितियों में यह आवश्यक हो जाता है कि भारत की विदेश नीति की दिशा, प्राथमिकताओं, सीमाओं और संभावनाओं का वस्तुपरक विश्लेषण किया जाए।

इसके अतिरिक्त, हिंदी माध्यम में इस विषय पर समकालीन और विश्लेषणात्मक शोध अपेक्षाकृत कम उपलब्ध है। अधिकतर अध्ययन अंग्रेज़ी भाषा में केंद्रित हैं, जबकि हिंदी में भी ऐसी शोध सामग्री की आवश्यकता है जो विद्यार्थियों, शोधार्थियों, अध्यापकों और नीति–विश्लेषकों के लिए उपयोगी हो। अतः यह अध्ययन न केवल अकादमिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि हिंदी में अंतरराष्ट्रीय संबंधों और भारतीय विदेश नीति के गंभीर विमर्श को समृद्ध करने की दृष्टि से भी अत्यंत आवश्यक है।

1.2 समस्या का स्वरूप एवं व्याख्या– इस शोध की मूल समस्या यह है कि बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था के उदय ने भारत की विदेश नीति के स्वरूप, दिशा और प्राथमिकताओं को किस प्रकार प्रभावित किया है। शीत युद्ध काल में भारत की विदेश नीति का प्रमुख आधार गुटनिरपेक्षता, उपनिवेशवाद–विरोध, शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व और विकासशील देशों के साथ सहयोग था। किंतु इक्कीसवीं सदी में अंतरराष्ट्रीय शक्ति–समीकरणों, वैश्विक आर्थिक संरचनाओं, सामरिक प्रतिस्पर्धा, तकनीकी परिवर्तन और क्षेत्रीय संघर्षों में आए बदलावों ने भारत को अपनी विदेश नीति के पारंपरिक ढाँचे में परिवर्तन करने के लिए प्रेरित किया है। यही परिवर्तन इस अध्ययन की केंद्रीय समस्या के रूप में सामने आता है।

समस्या का दूसरा आयाम यह है कि भारत एक ओर अपनी सामरिक स्वायत्तता को बनाए रखना चाहता है, तो दूसरी ओर उसे अमेरिका, रूस, यूरोप, जापान, आसियान, पश्चिम एशिया तथा वैश्विक दक्षिण के देशों के साथ बहुआयामी संबंध भी विकसित करने हैं। इसके साथ ही चीन के उदय, भारत–चीन सीमा विवाद, हिंद–प्रशांत क्षेत्र की राजनीति, समुद्री सुरक्षा और वैश्विक संस्थागत सुधार जैसे प्रश्न भारत के लिए जटिल कूटनीतिक चुनौतियाँ उत्पन्न करते हैं। ऐसे में यह समझना आवश्यक है कि भारत किस प्रकार विभिन्न शक्ति–केंद्रों के साथ संतुलन स्थापित करते हुए अपनी विदेश नीति को संचालित कर रहा है।

समस्या का तीसरा आयाम भारत की वैश्विक भूमिका से जुड़ा है। क्या भारत केवल बदलती विश्व व्यवस्था का एक अनुकूलनशील सहभागी है, या वह बहुध्रुवीय व्यवस्था के निर्माण में सक्रिय योगदान देने वाला निर्णायक कारक भी है? क्या भारत की विदेश नीति अब गुटनिरपेक्षता से आगे बढ़कर बहु–संरेखण और सामरिक स्वायत्तता पर आधारित नई कूटनीतिक शैली में परिवर्तित हो चुकी है? क्या भारत अपनी आर्थिक, सामरिक, तकनीकी और कूटनीतिक क्षमताओं के आधार पर एक प्रभावशाली वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित हो रहा है? इन्हीं प्रश्नों का विश्लेषण इस समस्या की व्याख्या का मूल आधार है।

अतः इस शोध की समस्या केवल भारत की विदेश नीति का वर्णन करना नहीं है, बल्कि बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था के संदर्भ में उसके बदलते चरित्र, नीतिगत व्यवहार, सामरिक संतुलन, वैश्विक दायित्व, क्षेत्रीय भूमिका और भविष्य की संभावनाओं का सम्यक् विश्लेषण करना है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 03, March 2026

1.3 अध्ययन का औचित्य– इस अध्ययन का औचित्य अनेक स्तरों पर सिद्ध होता है। प्रथम, वर्तमान विश्व व्यवस्था में तीव्र परिवर्तन हो रहे हैं और अंतरराष्ट्रीय राजनीति में शक्ति के अनेक केंद्र उभर रहे हैं। ऐसी स्थिति में भारत की विदेश नीति का अध्ययन यह समझने के लिए आवश्यक है कि एक उभरती हुई शक्ति बदलती वैश्विक परिस्थितियों में अपनी भूमिका कैसे निर्धारित करती है। भारत जैसे देश के लिए, जो एक ओर विकासशील विश्व की आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करता है और दूसरी ओर वैश्विक शक्ति बनने की दिशा में अग्रसर है, विदेश नीति का अध्ययन विशेष महत्व रखता है।

द्वितीय, यह विषय इसलिए भी औचित्यपूर्ण है क्योंकि भारत की विदेश नीति आज केवल पारंपरिक राजनय तक सीमित नहीं रह गई है। यह अब आर्थिक कूटनीति, रक्षा सहयोग, समुद्री सुरक्षा, इंडो–पैसिफिक रणनीति, ऊर्जा सुरक्षा, तकनीकी साझेदारी, जलवायु परिवर्तन, वैश्विक व्यापार, आपूर्ति श्रृंखला और बहुपक्षीय मंचों में सक्रिय भागीदारी जैसे व्यापक आयामों को समाहित करती है। इसलिए इस विषय का अध्ययन समकालीन अंतरराष्ट्रीय राजनीति की जटिलताओं को समझने के लिए अत्यंत उपयुक्त है।

तृतीय, भारत की विदेश नीति के समक्ष वर्तमान समय में जो चुनौतियाँ हैं जैसे चीन का उदय, सीमा विवाद, क्षेत्रीय प्रतिस्पर्धा, वैश्विक शक्ति–संघर्ष, पश्चिम एशिया की अस्थिरता, रूस–यूक्रेन संघर्ष, आतंकवाद, समुद्री हितों की रक्षा और वैश्विक संस्थागत सुधार वे इस विषय को और अधिक प्रासंगिक बनाती हैं। इस अध्ययन के माध्यम से यह समझा जा सकेगा कि भारत किस प्रकार अवसरों और चुनौतियों के बीच संतुलन स्थापित कर अपनी विदेश नीति को संचालित कर रहा है।

चतुर्थ, हिंदी भाषा में बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था और भारत की विदेश नीति पर गंभीर एवं व्यवस्थित शोध सामग्री की अपेक्षाकृत कमी है। अतः यह अध्ययन हिंदी अकादमिक जगत में अंतरराष्ट्रीय संबंधों के गंभीर विमर्श को समृद्ध करेगा और विद्यार्थियों, शोधार्थियों एवं शिक्षकों को एक उपयोगी संदर्भ–सामग्री प्रदान करेगा।

अंततः इस अध्ययन का औचित्य इस बात में भी निहित है कि यह केवल सैद्धांतिक महत्व का नहीं, बल्कि व्यावहारिक और नीतिगत दृष्टि से भी उपयोगी है। इस शोध के निष्कर्ष भारत की विदेश नीति की दिशा, सामरिक स्वायत्तता की प्रकृति, बहु–संरेखण की सीमाएँ, वैश्विक दक्षिण में नेतृत्व की संभावनाएँ तथा भविष्य की कूटनीतिक चुनौतियों को समझने में सहायक होंगे।

1.4 अध्ययन के उद्देश्य– इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

- बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था की अवधारणा, स्वरूप और प्रमुख विशेषताओं का अध्ययन करना।
- भारत की विदेश नीति के ऐतिहासिक विकास और उसके समकालीन परिवर्तनों का विश्लेषण करना।
- बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में भारत की सामरिक स्वायत्तता की भूमिका का परीक्षण करना।
- अमेरिका, रूस, चीन, यूरोपीय संघ तथा दक्षिण एशियाई देशों के साथ भारत के संबंधों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- भारत की विदेश नीति में बहु–संरेखण, क्षेत्रीय कूटनीति और वैश्विक सहभागिता के बढ़ते महत्व का मूल्यांकन करना।
- इंडो–पैसिफिक, क्वाड, ब्रिक्स, जी–20, एससीओ तथा वैश्विक दक्षिण के संदर्भ में भारत की भूमिका का विश्लेषण करना।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 03, March 2026

- भारत की विदेश नीति के समक्ष उपस्थित प्रमुख चुनौतियों जैसे सीमा विवाद, शक्ति–संतुलन, ऊर्जा सुरक्षा, आर्थिक निर्भरता और वैश्विक संघर्षों का अध्ययन करना।
- यह आकलन करना कि बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में भारत किस सीमा तक एक प्रभावशाली और निर्णायक वैश्विक शक्ति के रूप में उभर रहा है।

1.5 शोध–प्रश्न– प्रस्तुत अध्ययन निम्नलिखित शोध–प्रश्नों पर आधारित है–

- बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं, और यह एकध्रुवीय व्यवस्था से किस प्रकार भिन्न है?
- बदलती वैश्विक शक्ति–संरचना ने भारत की विदेश नीति को किस प्रकार प्रभावित किया है?
- क्या भारत की विदेश नीति का वर्तमान स्वरूप पारंपरिक गुटनिरपेक्षता से आगे बढ़कर सामरिक स्वायत्तता और बहु–संरेखण पर आधारित हो गया है?
- अमेरिका, रूस, चीन, यूरोपीय संघ और दक्षिण एशियाई देशों के साथ संबंधों में भारत किस प्रकार संतुलन स्थापित कर रहा है?
- इंडो–पैसिफिक, क्वाड, ब्रिक्स, जी–20 और वैश्विक दक्षिण के मंचों पर भारत की भूमिका कितनी प्रभावशाली है?
- बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था भारत के लिए कौन–कौन से अवसर और चुनौतियाँ प्रस्तुत करती है?
- क्या भारत वर्तमान वैश्विक व्यवस्था में केवल एक सहभागी शक्ति है, या वह एक निर्णायक और निर्माणकारी शक्ति के रूप में भी उभर रहा है?
- भविष्य की विश्व राजनीति में भारत की विदेश नीति की दिशा और संभावनाएँ क्या हो सकती हैं?

1.6 अध्ययन की परिधि एवं सीमाएँ– प्रस्तुत शोध का विषय "भारत की विदेश नीति और बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था" समकालीन अंतरराष्ट्रीय राजनीति के एक अत्यंत महत्वपूर्ण आयाम से संबंधित है। इस अध्ययन की परिधि मुख्यतः इक्कीसवीं सदी के बदलते वैश्विक परिदृश्य में भारत की विदेश नीति के स्वरूप, दिशा, प्राथमिकताओं, चुनौतियों तथा संभावनाओं के विश्लेषण तक सीमित है। विशेष रूप से शीत युद्धोत्तर काल के बाद उभरती बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था, वैश्विक शक्ति–संतुलन में परिवर्तन, सामरिक स्वायत्तता की अवधारणा, बहु–संरेखण की नीति, तथा वैश्विक मंचों पर भारत की बढ़ती सक्रियता को अध्ययन का मुख्य केंद्र बनाया गया है।

इस अध्ययन में भारत के प्रमुख वैश्विक और क्षेत्रीय संबंधों जैसे अमेरिका, रूस, चीन, यूरोपीय संघ, दक्षिण एशिया, इंडो–पैसिफिक, ब्रिक्स, क्वाड, जी–20, एससीओ तथा वैश्विक दक्षिण का विश्लेषण किया जाएगा। साथ ही भारत की विदेश नीति के उन प्रमुख आयामों को भी समाहित किया जाएगा, जो वर्तमान बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में अधिक प्रासंगिक हैं; जैसे सामरिक स्वायत्तता, सुरक्षा, आर्थिक कूटनीति, ऊर्जा सुरक्षा, समुद्री हित, जलवायु कूटनीति, बहुपक्षवाद, तथा वैश्विक संस्थागत सुधार की दिशा में भारत की भूमिका। इस प्रकार अध्ययन की परिधि सैद्धांतिक तथा व्यावहारिक दोनों स्तरों पर भारत की विदेश नीति के समकालीन रूप को समझने का प्रयास करती है।

कालगत दृष्टि से यह अध्ययन मुख्यतः शीत युद्धोत्तर काल से वर्तमान समय तक केंद्रित है, किंतु विषय की पृष्ठभूमि को स्पष्ट करने के लिए स्वतंत्रता–प्राप्ति के बाद भारत की विदेश नीति के ऐतिहासिक विकास का

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 03, March 2026

संक्षिप्त उल्लेख भी किया जाएगा। इस शोध में अंतरराष्ट्रीय संबंधों की समस्त घटनाओं, सभी द्विपक्षीय संबंधों या संपूर्ण वैश्विक संकटों का विस्तृत विवेचन करना संभव नहीं है; अतः अध्ययन केवल उन पक्षों तक सीमित रहेगा जो बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था और भारत की विदेश नीति के परस्पर संबंध को स्पष्ट करते हैं।

जहाँ तक सीमाओं का प्रश्न है, इस अध्ययन की पहली सीमा यह है कि विदेश नीति एक अत्यंत गतिशील और परिवर्तनीय क्षेत्र है। अंतरराष्ट्रीय संबंधों में घटनाएँ, शक्ति–समीकरण और कूटनीतिक प्राथमिकताएँ समय–समय पर बदलती रहती हैं; अतः शोध के निष्कर्ष भी अध्ययन–काल तक उपलब्ध तथ्यों और परिस्थितियों पर आधारित होंगे। दूसरी सीमा यह है कि यह अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों जैसे पुस्तकों, शोध–पत्रों, सरकारी दस्तावेजों, नीति–पत्रों, रिपोर्टों और प्रामाणिक ऑनलाइन सामग्रीकृपर आधारित है; इसलिए इसमें प्रत्यक्ष क्षेत्रीय सर्वेक्षण या प्राथमिक डेटा–संग्रह की भूमिका सीमित रहेगी।

तीसरी सीमा यह है कि बहध्रुवीय विश्व व्यवस्था स्वयं एक विकसित होती हुई अवधारणा है, जिसके स्वरूप और परिभाषा को लेकर विद्वानों में मतभेद पाए जाते हैं। अतः इस शोध में उपलब्ध प्रमुख सिद्धांतों और व्याख्याओं के आधार पर विश्लेषण प्रस्तुत किया जाएगा। चौथी सीमा यह है कि अध्ययन का केंद्र भारत है; इसलिए अन्य वैश्विक शक्तियों की विदेश नीतियों का विश्लेषण केवल उतना ही किया जाएगा, जितना भारत की विदेश नीति को समझने के लिए आवश्यक होगा।

इन सीमाओं के बावजूद यह अध्ययन विषय की समकालीन प्रासंगिकता, नीतिगत उपयोगिता और अकादमिक महत्व के कारण पर्याप्त सार्थक है। यह शोध भारत की विदेश नीति के बदलते चरित्र को बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था के संदर्भ में समझने के लिए एक व्यवस्थित और विश्लेषणात्मक आधार प्रस्तुत करेगा।

1.7 परिकल्पनाएँ (Hypotheses)-

- बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था ने भारत की विदेश नीति को अधिक सक्रिय, बहुआयामी और संतुलनकारी बनाया है।
- भारत की विदेश नीति का वर्तमान स्वरूप परंपरागत गुटनिरपेक्षता की अपेक्षा सामरिक स्वायत्तता और बहु–संरेखण पर अधिक आधारित है।
- भारत बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में वैश्विक दक्षिण के प्रतिनिधि तथा क्षेत्रीय शक्ति के रूप में अपनी स्थिति को मजबूत कर रहा है।
- अमेरिका, रूस और अन्य वैश्विक शक्तियों के साथ समानांतर संबंध बनाए रखना भारत की विदेश नीति की प्रमुख रणनीतिक विशेषता है।
- चीन के उदय, इंडो–पैसिफिक राजनीति, तथा वैश्विक शक्ति–संतुलन में परिवर्तन ने भारत की विदेश नीति को अधिक यथार्थवादी और सुरक्षा–केंद्रित बनाया है।
- बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था भारत के लिए अवसर और चुनौतियाँ दोनों प्रस्तुत करती है, परंतु दीर्घकाल में यह भारत की वैश्विक भूमिका को सुदृढ़ करती है।

1.8 शोध प्राविधि– प्रस्तुत शोध मुख्यतः गुणात्मक प्रकृति का है। इसका उद्देश्य भारत की विदेश नीति और बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था के बीच अंतर्संबंधों का विश्लेषण करना है, न कि मात्र सांख्यिकीय तथ्यों का

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 03, March 2026

संकलन। इसलिए इस अध्ययन में वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक तथा व्याख्यात्मक शोध–पद्धति का समन्वित प्रयोग किया जाएगा।

वर्णनात्मक पद्धति के अंतर्गत बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था की अवधारणा, स्वरूप, विशेषताएँ तथा भारत की विदेश नीति के ऐतिहासिक विकास का व्यवस्थित प्रस्तुतीकरण किया जाएगा। विश्लेषणात्मक पद्धति के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया जाएगा कि बदलती वैश्विक शक्ति–संरचना ने भारत की विदेश नीति की दिशा, प्राथमिकताओं और रणनीतियों को किस प्रकार प्रभावित किया है। व्याख्यात्मक पद्धति के द्वारा भारत की सामरिक स्वायत्तता, बहु–संरेखण, क्षेत्रीय कूटनीति, वैश्विक दक्षिण में नेतृत्व, तथा प्रमुख वैश्विक मंचों पर उसकी भूमिका की गहन विवेचना की जाएगी।

इस शोध में ऐतिहासिक पद्धति का भी सहायक रूप से प्रयोग होगा, क्योंकि भारत की विदेश नीति के समकालीन स्वरूप को समझने के लिए उसके ऐतिहासिक विकास को जानना आवश्यक है। स्वतंत्रता के बाद गुटनिरपेक्षता, पंचशील, उपनिवेशवाद–विरोध, शीत युद्ध कालीन संतुलन, तथा शीत युद्धोत्तर युग में सामरिक स्वायत्तता की ओर संक्रमण का संक्षिप्त विश्लेषण इस उद्देश्य की पूर्ति करेगा।

अध्ययन में तुलनात्मक पद्धति का सीमित प्रयोग भी किया जाएगा, विशेषकर भारत के अमेरिका, रूस, चीन, यूरोपीय संघ तथा दक्षिण एशियाई देशों के साथ संबंधों के विश्लेषण में। इससे यह स्पष्ट किया जा सकेगा कि भारत किस प्रकार विभिन्न शक्ति–केंद्रों के साथ अलग–अलग स्तरों पर अपने हितों का संतुलन स्थापित कर रहा है। इसके अतिरिक्त, समकालीन घटनाओंकृजैसे इंडो–पैसिफिक रणनीति, क्वाड, ब्रिक्स, जी–20, रूस–यूक्रेन संघर्ष, वैश्विक दक्षिण का विमर्श, तथा चीन के उदयकृको केस–आधारित विश्लेषण के रूप में भी उपयोग किया जा सकता है।

तथ्य–संकलन के लिए मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया जाएगा। इनमें मान्यताप्राप्त पुस्तकें, शोध–पत्र, जर्नल लेख, सरकारी दस्तावेज, विदेश मंत्रालय के प्रकाशन, नीति आयोग तथा अन्य संस्थागत रिपोर्टें, संयुक्त राष्ट्र, विश्व बैंक, IMF. SIPRI, ORF, IDSA, Carnegie, Brookings, IISS आदि की रिपोर्टें, तथा विश्वसनीय समाचार स्रोतों और आधिकारिक वेबसाइटों से प्राप्त सामग्री सम्मिलित होगी। हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं के साहित्य का उपयोग किया जाएगा, ताकि अध्ययन अधिक संतुलित और व्यापक बन सके।

शोध में संकलित सामग्री का विषयानुसार वर्गीकरण, तुलनात्मक विश्लेषण तथा आलोचनात्मक परीक्षण किया जाएगा। इस प्रक्रिया के माध्यम से शोध–प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने तथा परिकल्पनाओं की पुष्टि या अपुष्टि का प्रयास किया जाएगा। इस प्रकार यह शोध सैद्धांतिक आधार, नीतिगत संदर्भ और समकालीन अंतरराष्ट्रीय परिदृश्यकृतीनों को समेटते हुए एक समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करेगा।

तथ्य–संकलन के स्रोत– प्रस्तुत शोध "भारत की विदेश नीति और बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था" मुख्यतः द्वितीयक तथ्यों पर आधारित है। विषय की प्रकृति सैद्धांतिक, विश्लेषणात्मक तथा समकालीन अंतरराष्ट्रीय राजनीति से संबद्ध होने के कारण तथ्य–संकलन के लिए विविध प्रामाणिक स्रोतों का उपयोग किया जाएगा। इन स्रोतों के माध्यम से भारत की विदेश नीति के ऐतिहासिक विकास, वर्तमान स्वरूप, प्रमुख आयामों, कूटनीतिक प्राथमिकताओं, वैश्विक मंचों पर भूमिका तथा बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था के संदर्भ में उसकी स्थिति का सम्यक् अध्ययन किया जा सकेगा। तथ्य–संकलन के प्रमुख स्रोत निम्नलिखित हैं–

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 03, March 2026

प्रथम, इस अध्ययन के लिए मान्यताप्राप्त पुस्तकों का उपयोग किया जाएगा। भारत की विदेश नीति, अंतरराष्ट्रीय संबंध, वैश्विक राजनीति, सामरिक अध्ययन, कूटनीति, बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था, गुटनिरपेक्षता, सामरिक स्वायत्तता, तथा क्षेत्रीय राजनीति से संबंधित हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं की पुस्तकों का अध्ययन किया जाएगा। इन पुस्तकों से विषय का वैचारिक, ऐतिहासिक और विश्लेषणात्मक आधार प्राप्त होगा।

द्वितीय, शोध–पत्रों, जर्नल लेखों और समीक्षित पत्रिकाओं को तथ्य–संकलन का महत्वपूर्ण स्रोत बनाया जाएगा। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर की शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों के माध्यम से भारत की विदेश नीति के समकालीन मुद्दों, नई प्रवृत्तियों, सैद्धांतिक बहसों और वैश्विक शक्ति–संतुलन से जुड़ी व्याख्याओं को समझा जाएगा। इससे शोध अधिक अकादमिक और अद्यतन बनेगा।

तृतीय, भारत सरकार के आधिकारिक दस्तावेजों का उपयोग किया जाएगा। विशेष रूप से विदेश मंत्रालय, रक्षा मंत्रालय, नीति आयोग, संसदीय बहसों, वार्षिक प्रतिवेदनों, नीति वक्तव्यों, तथा भारत सरकार द्वारा जारी श्वेतपत्रों और आधिकारिक वक्तव्यों से तथ्य संकलित किए जाएंगे। इन स्रोतों से भारत की विदेश नीति के आधिकारिक दृष्टिकोण, प्राथमिकताओं और नीति–दिशाओं की प्रामाणिक जानकारी प्राप्त होगी।

चतुर्थ, अंतरराष्ट्रीय संगठनों और संस्थाओं की रिपोर्टें इस शोध के लिए अत्यंत उपयोगी स्रोत होंगी। संयुक्त राष्ट्र, विश्व बैंक, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष, एशियाई विकास बैंक, SIPRI, IISS, WTO, UNDP, UNESCO, तथा अन्य अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की रिपोर्टों का उपयोग वैश्विक शक्ति–संतुलन, आर्थिक संबंधों, रक्षा व्यय, विकास, जलवायु, सुरक्षा और बहुपक्षीय सहयोग से जुड़े तथ्यों के लिए किया जाएगा।

पंचम, थिंक–टैंक और नीति–अध्ययन संस्थानों की रिपोर्टें और विश्लेषण भी तथ्य–संकलन का प्रमुख आधार होंगी। जैसे —Observer Research Foundation, Manohar Parrikar Institute for Defence Studies and Analyses, Carnegie Endowment, Brookings Institution, Chatham House, RAND Corporation, Council on Foreign Relations, आदि संस्थानों के शोध–पत्र और नीति–विश्लेषण इस अध्ययन को समकालीन और रणनीतिक दृष्टि प्रदान करेंगे।

षष्ठ, समाचार–पत्रों, पत्रिकाओं और विश्वसनीय ऑनलाइन स्रोतों का भी सहायक रूप में उपयोग किया जाएगा। विशेषकर द हिंदू, इंडियन एक्सप्रेस, हिन्दुस्तान, दैनिक जागरण, बीबीसी, डॉयचे वेले, द इकोनॉमिस्ट, फ्रंटलाइन, इंडिया टुडे, डाउन टू अर्थ तथा अन्य प्रामाणिक समाचार स्रोतों से समकालीन घटनाओं, नीतिगत वक्तव्यों और विश्लेषणात्मक टिप्पणियों का संदर्भ लिया जाएगा। हालाँकि इन स्रोतों का उपयोग सावधानीपूर्वक और तुलनात्मक सत्यापन के बाद किया जाएगा।

सप्तम, आधिकारिक वेबसाइटों और डिजिटल अभिलेखागार से सामग्री एकत्र की जाएगी। विदेश मंत्रालय, प्रधानमंत्री कार्यालय, संयुक्त राष्ट्र, जी–20, ब्रिक्स, क्वाड, एससीओ, वर्ल्ड बैंक, IMF तथा अन्य संस्थाओं की वेबसाइटों से अद्यतन सूचनाएँ, घोषणाएँ, नीति दस्तावेज और सांख्यिकीय विवरण प्राप्त किए जाएंगे। डिजिटल स्रोत शोध को नवीनतम तथ्य उपलब्ध कराने में सहायक होंगे।

अष्टम, विषय से संबंधित भाषण, व्याख्यान, साक्षात्कार और नीति–निर्माताओं के वक्तव्य भी उपयोगी स्रोत होंगे। भारत के प्रधानमंत्रियों, विदेश मंत्रियों, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकारों, राजनयिकों और अंतरराष्ट्रीय नेताओं के भाषणों से विदेश नीति के उद्देश्यों, वैचारिक आधार और व्यवहारिक दिशा का विश्लेषण किया जा सकेगा।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 03, March 2026

नवम, विश्वविद्यालयीय शोध–प्रबंध, पीएच.डी. थीसिस और अकादमिक dissertation भी सहायक स्रोत के रूप में उपयोग किए जाएंगे। इनसे विषय के शोध–अंतराल, पूर्ववर्ती अध्ययनों और विशिष्ट तर्कों की पहचान करने में सहायता मिलेगी।

दशम, जहाँ आवश्यक होगा, वहाँ सांख्यिकीय डेटा, तालिकाएँ और तुलनात्मक सूचनाएँ भी संकलित की जाएँगी, जैसे व्यापारिक संबंध, रक्षा सहयोग, वैश्विक सूचकांक, ऊर्जा आयात, बहुपक्षीय मंचों में भागीदारी, आदि। इनका उपयोग शोध के विश्लेषणात्मक पक्ष को अधिक ठोस और प्रमाणिक बनाने के लिए किया जाएगा।

इस प्रकार प्रस्तुत शोध में तथ्य–संकलन के लिए पुस्तकों, शोध–पत्रों, सरकारी दस्तावेजों, अंतरराष्ट्रीय रिपोर्टों, थिंक–टैंक विश्लेषणों, आधिकारिक वेबसाइटों, भाषणों, समाचार स्रोतों और सांख्यिकीय सामग्री सभी का समन्वित उपयोग किया जाएगा। इन विविध स्रोतों के आधार पर शोध को अधिक प्रामाणिक, संतुलित, अद्यतन और विश्लेषणात्मक स्वरूप प्रदान किया जा सकेगा।

1.9 साहित्य समीक्षा (Review of Literature)– भारत की विदेश नीति और बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था पर उपलब्ध साहित्य अत्यंत विस्तृत, बहुआयामी और विविध दृष्टिकोणों से समृद्ध है। इस विषय की साहित्य समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि विद्वानों ने भारत की विदेश नीति का अध्ययन ऐतिहासिक, सैद्धांतिक, रणनीतिक, आर्थिक और क्षेत्रीय सभी स्तरों पर किया है, किंतु बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था के समकालीन संदर्भ में भारत की भूमिका पर निरंतर नए विमर्श उभर रहे हैं।

भारत की विदेश नीति के बौद्धिक और ऐतिहासिक आधार को समझने में जवाहरलाल नेहरू की विदेश नीति संबंधी दृष्टि अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। नेहरू ने भारत की विदेश नीति को उपनिवेशवाद–विरोध, शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व, पंचशील और गुटनिरपेक्षता के सिद्धांतों पर स्थापित किया। इसके पश्चात एम. एस. राजन, ए. अप्पादुरई, वी. पी. दत्त तथा जे. एन. दीक्षित जैसे विद्वानों ने भारत की विदेश नीति के ऐतिहासिक विकास, सिद्धांतगत आधार और व्यावहारिक पक्षों का गंभीर विवेचन किया है। इन लेखकों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भारत की विदेश नीति आदर्शवाद और यथार्थवाद के संतुलन पर विकसित हुई है।

राजीव सीकरी ने भारत की विदेश नीति को बदलते वैश्विक परिवेश में एक व्यवहारिक दृष्टिकोण से देखा है। उनके अनुसार शीत युद्धोत्तर काल में भारत ने अपने राष्ट्रीय हितों को अधिक स्पष्ट और व्यावहारिक रूप में परिभाषित किया। शशि थरूर ने भारतीय विदेश नीति की वैचारिक और सभ्यतागत पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए यह प्रतिपादित किया कि भारत की वैश्विक भूमिका उसकी ऐतिहासिक चेतना, सांस्कृतिक विरासत और लोकतांत्रिक मूल्यों से जुड़ी हुई है। सुब्रहमण्यम जयशंकर ने समकालीन विश्व राजनीति में भारत की विदेश नीति को "रणनीतिक आत्मविश्वास" और "बहु–संरेखण" की दृष्टि से व्याख्यायित किया है। उनका मत है कि भारत आज पारंपरिक गुटनिरपेक्षता से आगे बढ़कर अधिक सक्रिय, लचीली और हित–आधारित विदेश नीति का अनुसरण कर रहा है।

बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था की अवधारणा पर अंतरराष्ट्रीय संबंधों के अनेक सिद्धांतकारों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। केनेथ वाल्ट्ज का नव–यथार्थवादी दृष्टिकोण शक्ति–संतुलन और अंतरराष्ट्रीय संरचना के अध्ययन में उपयोगी आधार प्रदान करता है। हेडली बुल ने अंतरराष्ट्रीय समाज की अवधारणा के माध्यम से यह समझाने का प्रयास किया कि शक्ति के अनेक केंद्रों के बीच भी एक प्रकार का संस्थागत संतुलन स्थापित

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 03, March 2026

हो सकता है। समकालीन यथार्थवादी और रणनीतिक विश्लेषकों ने यह प्रतिपादित किया है कि शीत युद्धोत्तर एकध्रुवीयता अब क्रमशः क्षीण हो रही है और उसकी जगह प्रतिस्पर्धी बहुध्रुवीयता उभर रही है, जिसमें चीन, रूस, भारत और यूरोपीय शक्तियों की भूमिका बढ़ रही है।

भारत की समकालीन विदेश नीति पर सी. राजा मोहन के अध्ययन विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। उन्होंने भारत की समुद्री रणनीति, हिंद–प्रशांत क्षेत्र में भूमिका, और वैश्विक शक्ति–संतुलन के संदर्भ में भारत–अमेरिका संबंधों की नई दिशा का विस्तृत विश्लेषण किया है। उनके कार्य यह संकेत करते हैं कि भारत अब केवल दक्षिण एशियाई शक्ति नहीं, बल्कि हिंद–प्रशांत और व्यापक एशियाई भू–राजनीति का महत्वपूर्ण कारक बन चुका है। हर्ष वी. पंत ने भारत की विदेश नीति, सुरक्षा–रणनीति, चीन–भारत संबंध, क्वाड, तथा इंडो–पैसिफिक की राजनीति का विश्लेषण करते हुए यह दिखाया है कि भारत की विदेश नीति में सुरक्षा और रणनीतिक साझेदारियों का महत्व निरंतर बढ़ रहा है।

डॉ. मनोज जोशी, भरत कर्णाड, तथा अन्य भारतीय रणनीतिक विचारकों ने भारत की सामरिक स्वायत्तता, रक्षा नीति, परमाणु रणनीति और शक्ति–प्रक्षेपण की क्षमता पर महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किए हैं। इन अध्ययनों से यह समझने में सहायता मिलती है कि बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में भारत की भूमिका केवल कूटनीतिक नहीं, बल्कि सामरिक और सैन्य आयामों से भी जुड़ी हुई है।

वैश्विक दक्षिण, बहुपक्षवाद और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं में सुधार के संदर्भ में भारत की भूमिका पर भी पर्याप्त साहित्य उपलब्ध है। जी–20, ब्रिक्स, शंघाई सहयोग संगठन, संयुक्त राष्ट्र सुधार, जलवायु न्याय और विकासात्मक कूटनीति के संदर्भ में अनेक अध्ययनों ने भारत को विकासशील देशों की आवाज़ और एक जिम्मेदार वैश्विक शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया है। इस साहित्य से स्पष्ट होता है कि भारत बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में केवल अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि वह वैश्विक शासन की संरचना में अधिक न्यायपूर्ण प्रतिनिधित्व और संतुलन का पक्षधर भी है।

हालाँकि उपलब्ध साहित्य अत्यंत समृद्ध है, फिर भी कुछ शोध–अंतराल स्पष्ट दिखाई देते हैं। प्रथम, अधिकांश साहित्य अंग्रेज़ी भाषा में केंद्रित है; हिंदी में इस विषय पर समकालीन, व्यवस्थित और विश्लेषणात्मक अध्ययन अपेक्षाकृत कम हैं। द्वितीय, अनेक अध्ययन भारत की विदेश नीति के किसी एक आयामकृजैसे भारत–अमेरिका संबंध, चीन–नीति, क्वाड, या इंडो–पैसिफिक पर केंद्रित हैं, जबकि बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था के व्यापक संदर्भ में भारत की विदेश नीति का समग्र अध्ययन सीमित है। तृतीय, सामरिक स्वायत्तता और बहु–संरेखण की अवधारणाओं को अकसर वर्णनात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है; उनके तुलनात्मक और आलोचनात्मक परीक्षण की अभी भी पर्याप्त आवश्यकता है।

इसी शोध–अंतराल को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन भारत की विदेश नीति और बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था के परस्पर संबंध का समग्र, विश्लेषणात्मक और हिंदी माध्यम में व्यवस्थित अध्ययन प्रस्तुत करने का प्रयास करेगा। यह साहित्य समीक्षा इस बात की पुष्टि करती है कि विषय अकादमिक, नीतिगत और समकालीन तीनों दृष्टियों से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

1.10 डेटा विश्लेषण– प्रस्तुत शोध मुख्यतः गुणात्मक प्रकृति का है, अतः इसमें डेटा विश्लेषण का आधार सांख्यिकीय परीक्षण की अपेक्षा विषयवस्तु–विश्लेषण, तुलनात्मक विवेचन और व्याख्यात्मक परीक्षण पर अधिक आधारित होगा। अध्ययन में संकलित डेटा को विभिन्न विषयगत श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाएगा, ताकि

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 03, March 2026

भारत की विदेश नीति और बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था के बीच संबंधों का व्यवस्थित और तार्किक विश्लेषण किया जा सके।

सबसे पहले संकलित सामग्री को प्रमुख विषयों के आधार पर वर्गीकृत किया जाएगा, जैसे बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था की अवधारणा, भारत की विदेश नीति का ऐतिहासिक विकास, सामरिक स्वायत्तता, बहु–संरेखण, भारत–अमेरिका संबंध, भारत–रूस संबंध, भारत–चीन संबंध, दक्षिण एशिया में भारत की भूमिका, इंडो–पैसिफिक नीति, वैश्विक दक्षिण, बहुपक्षीय मंचों में भागीदारी, तथा समकालीन वैश्विक चुनौतियाँ। इस विषयगत वर्गीकरण के बाद प्रत्येक श्रेणी का क्रमिक विश्लेषण किया जाएगा।

दूसरे चरण में तुलनात्मक विश्लेषण की पद्धति अपनाई जाएगी। उदाहरणार्थ, भारत के अमेरिका और रूस के साथ संबंधों की प्रकृति, चीन के प्रति उसकी नीति, तथा वैश्विक दक्षिण के संदर्भ में उसकी भूमिका का तुलनात्मक परीक्षण किया जाएगा। इसी प्रकार बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में भारत की स्थिति की तुलना अन्य उभरती शक्तियों से भी की जा सकती है, ताकि यह समझा जा सके कि भारत की विदेश नीति की विशिष्टता क्या है और उसकी सीमाएँ कहाँ तक हैं।

तीसरे चरण में व्याख्यात्मक विश्लेषण के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया जाएगा कि भारत की विदेश नीति में सामरिक स्वायत्तता, बहु–संरेखण और संतुलनकारी कूटनीति जैसे तत्व किस प्रकार कार्य कर रहे हैं। यह विश्लेषण केवल घटनाओं का वर्णन नहीं करेगा, बल्कि उनके पीछे निहित राष्ट्रीय हितों, सामरिक आवश्यकताओं और वैश्विक शक्ति–समीकरणों को भी रेखांकित करेगा। उदाहरण के लिए, क्वाड में भारत की भागीदारी और साथ ही ब्रिक्स एवं एससीओ में उसकी सक्रियता का विश्लेषण इस दृष्टि से किया जाएगा कि भारत विभिन्न मंचों पर अपने हितों के अनुरूप संतुलित विदेश नीति का अनुसरण कर रहा है।

चौथे चरण में केस–आधारित विश्लेषण का उपयोग किया जा सकता है। जैसे रूस–यूक्रेन संघर्ष पर भारत की स्थिति, इंडो–पैसिफिक रणनीति में उसकी भूमिका, जी–20 में उसका नेतृत्व, या वैश्विक दक्षिण के प्रति उसकी कूटनीतिक सक्रियता। इन उदाहरणों के आधार पर यह परीक्षण किया जाएगा कि भारत बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में किस प्रकार एक स्वायत्त और उत्तरदायी शक्ति के रूप में स्वयं को प्रस्तुत कर रहा है।

अंततः शोध–प्रश्नों और परिकल्पनाओं के संदर्भ में संकलित सामग्री का समेकित विश्लेषण किया जाएगा। इस प्रक्रिया में यह देखा जाएगा कि क्या भारत की विदेश नीति वास्तव में परंपरागत गुटनिरपेक्षता से आगे बढ़कर बहु–संरेखण और सामरिक स्वायत्तता पर आधारित हो चुकी है; क्या भारत बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में एक सक्रिय और निर्णायक शक्ति के रूप में उभर रहा है; तथा क्या यह नई व्यवस्था भारत के लिए अवसरों की अपेक्षा चुनौतियों का अधिक निर्माण करती है, अथवा दोनों का संतुलित स्वरूप प्रस्तुत करती है।

इस प्रकार डेटा विश्लेषण की पूरी प्रक्रिया विषयगत वर्गीकरण, तुलनात्मक अध्ययन, व्याख्यात्मक परीक्षण और नीतिगत निष्कर्षों के आधार पर संचालित होगी। इससे अध्ययन को तार्किकता, गहराई और अकादमिक विश्वसनीयता प्राप्त होगी।

1.11 चर्चा (Discussion)– "भारत की विदेश नीति और बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था" विषय का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि समकालीन अंतरराष्ट्रीय राजनीति अब शीत युद्धोत्तर एकध्रुवीयता की सीमाओं से आगे

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 03, March 2026

बढ़ चुकी है। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में शक्ति के अनेक केंद्र सक्रिय हैं और विश्व राजनीति का स्वरूप अधिक जटिल, बहुस्तरीय तथा प्रतिस्पर्धात्मक हो गया है। ऐसे समय में भारत की विदेश नीति केवल पारंपरिक कूटनीतिक व्यवहार तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि वह राष्ट्रीय हित, क्षेत्रीय सुरक्षा, वैश्विक उत्तरदायित्व, आर्थिक अवसर और सामरिक संतुलनकृसभी के बीच एक व्यावहारिक समन्वय का रूप धारण कर चुकी है। यही इस अध्ययन की चर्चा का मूल आधार है।

भारत की विदेश नीति के समकालीन स्वरूप में सबसे प्रमुख तत्व "सामरिक स्वायत्तता" का उभार है। यह अवधारणा भारत को किसी एक शक्ति–गुट में बँधे बिना अपने हितों के अनुसार विभिन्न देशों और मंचों के साथ संबंध विकसित करने की स्वतंत्रता प्रदान करती है। भारत ने एक ओर अमेरिका के साथ रक्षा, प्रौद्योगिकी, समुद्री सुरक्षा और इंडो–पैसिफिक सहयोग को सुदृढ़ किया है, तो दूसरी ओर रूस के साथ ऐतिहासिक सामरिक संबंधों, ऊर्जा सहयोग और रक्षा–साझेदारी को भी बनाए रखा है। इसी प्रकार, ब्रिक्स, एससीओ, जी–20 और क्वाड जैसे मंचों पर एक साथ सक्रिय रहना इस बात का संकेत है कि भारत की विदेश नीति अब "एकरेखीय" न होकर "बहुस्तरीय" और "हित–आधारित" बन चुकी है।

चर्चा से यह भी स्पष्ट होता है कि बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था ने भारत के लिए अवसरों और चुनौतियों दोनों का नया परिदृश्य निर्मित किया है। अवसरों की दृष्टि से देखें तो यह व्यवस्था भारत को एक उभरती हुई शक्ति, वैश्विक दक्षिण की आवाज़, क्षेत्रीय संतुलनकारी राष्ट्र तथा बहुपक्षीय मंचों के प्रभावी सहभागी के रूप में स्थापित होने का अवसर देती है। जी–20 की अध्यक्षता, जलवायु परिवर्तन, सतत विकास, आपूर्ति श्रृंखला विविधीकरण, समुद्री सुरक्षा, तथा वैश्विक संस्थागत सुधार जैसे प्रश्नों पर भारत की सक्रिय भूमिका उसकी बढ़ती अंतरराष्ट्रीय स्वीकृति को दर्शाती है। इससे यह संकेत मिलता है कि भारत अब केवल नियमों का पालन करने वाला राष्ट्र नहीं, बल्कि वैश्विक विमर्श को दिशा देने वाला राष्ट्र भी बनता जा रहा है।

दूसरी ओर, यह चर्चा इस तथ्य की ओर भी संकेत करती है कि बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था स्वभावतः अनिश्चित, प्रतिस्पर्धात्मक और तनावपूर्ण है। चीन का उदय और उसकी आक्रामक क्षेत्रीय नीति, भारत–चीन सीमा विवाद, पाकिस्तान द्वारा उत्पन्न सुरक्षा चुनौतियाँ, पश्चिम एशिया की अस्थिरता, रूस–यूक्रेन युद्ध जैसे अंतरराष्ट्रीय संकट, तथा वैश्विक शक्ति–संघर्ष भारत की विदेश नीति को लगातार जटिल बनाते हैं। ऐसी स्थिति में भारत को अपने आदर्शवादी सिद्धांतों और व्यावहारिक राष्ट्रीय हितों के बीच संतुलन बनाकर चलना पड़ता है। यह संतुलन ही उसकी विदेश नीति की सफलता और सीमाओं दोनों को निर्धारित करता है।

इस अध्ययन की चर्चा का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि भारत की विदेश नीति में "गुटनिरपेक्षता" की पारंपरिक अवधारणा अब अपने पूर्ववर्ती रूप में नहीं रह गई है। इसके स्थान पर "सामरिक स्वायत्तता" और "बहु–संरेखण" का व्यावहारिक मॉडल उभरकर सामने आया है। भारत अब किसी शक्ति–गुट से दूरी बनाकर निष्क्रिय रहने के बजाय विभिन्न देशों के साथ मुद्दा–विशेष के आधार पर सहयोग स्थापित कर रहा है। यह परिवर्तन इस बात को दर्शाता है कि समकालीन विश्व व्यवस्था में प्रभावी बने रहने के लिए केवल वैचारिक तटस्थता पर्याप्त नहीं, बल्कि सक्रिय, लचीली और परिणामोन्मुख विदेश नीति आवश्यक है।

चर्चा से यह भी सामने आता है कि भारत की विदेश नीति का क्षेत्रीय आयाम भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। दक्षिण एशिया में भारत की भूमिका केवल एक बड़े पड़ोसी राष्ट्र की नहीं, बल्कि स्थिरता, विकास और क्षेत्रीय सहयोग के संवाहक की भी है। "पड़ोसी प्रथम" नीति, हिंद महासागर क्षेत्र में सक्रियता, आसियान के साथ सहयोग, तथा इंडो–पैसिफिक में भारत की रणनीतिक उपस्थिति यह दर्शाती है कि भारत अपनी विदेश

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 03, March 2026

नीति को केवल वैश्विक शक्ति–संतुलन तक सीमित नहीं रखता, बल्कि उसे क्षेत्रीय हितों और समुद्री भू–राजनीति से भी जोड़कर देखता है।

इस संदर्भ में यह भी विचारणीय है कि भारत की विदेश नीति अब आर्थिक कूटनीति, तकनीकी सहयोग, ऊर्जा सुरक्षा, रक्षा–आधुनिकीकरण और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला से भी गहरे रूप में जुड़ गई है। इस परिवर्तन ने विदेश नीति को अधिक व्यापक और बहुआयामी बना दिया है। पहले जहाँ विदेश नीति मुख्यतः राजनीतिक और सामरिक संबंधों के इर्द–गिर्द केंद्रित थी, वहीं अब उसमें व्यापार, निवेश, तकनीक, जलवायु, स्वास्थ्य, आपदा प्रबंधन और डिजिटल सहयोग जैसे नए क्षेत्र भी शामिल हो गए हैं। इस प्रकार समकालीन विदेश नीति केवल "राजनय" नहीं, बल्कि "समग्र राष्ट्रीय शक्ति" की अभिव्यक्ति बन चुकी है।

अंततः चर्चा यह स्पष्ट करती है कि बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में भारत की विदेश नीति एक संक्रमणशील किन्तु आत्मविश्वासी चरण से गुजर रही है। यह विदेश नीति न तो पूर्णतः आदर्शवादी है और न केवल यथार्थवादी; बल्कि यह दोनों के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती है। भारत एक ओर विश्व शांति, न्यायपूर्ण वैश्विक व्यवस्था और वैश्विक दक्षिण की भागीदारी की बात करता है, तो दूसरी ओर वह अपने राष्ट्रीय हितों, सुरक्षा और रणनीतिक स्वायत्तता से समझौता नहीं करता। यही द्वंद्व और संतुलन भारत की समकालीन विदेश नीति का विशिष्ट स्वरूप निर्मित करता है।

1.12 परिणाम (Findings)– प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित प्रमुख परिणाम प्राप्त होते हैं–

बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था का उदय भारत की विदेश नीति के पुनर्संरचन का एक प्रमुख कारण है।

बदलती वैश्विक शक्ति–संरचना ने भारत को अपनी विदेश नीति को अधिक सक्रिय, संतुलित और बहुआयामी बनाने के लिए प्रेरित किया है।

भारत की विदेश नीति अब पारंपरिक गुटनिरपेक्षता से आगे बढ़कर सामरिक स्वायत्तता पर आधारित हो चुकी है।

भारत किसी एक शक्ति–गुट पर निर्भर न रहकर अपने हितों के अनुसार विभिन्न वैश्विक और क्षेत्रीय शक्तियों से संबंध विकसित कर रहा है।

भारत की विदेश नीति में बहु–संरेखण (Multi-alignment) एक प्रमुख रणनीतिक प्रवृत्ति के रूप में उभरा है।

भारत एक ही समय में अमेरिका, रूस, यूरोपीय संघ, जापान, आसियान, ब्रिक्स, एससीओ और क्वाड जैसे विभिन्न मंचों पर सक्रिय है।

बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था भारत के लिए अवसर और चुनौतियाँ दोनों प्रस्तुत करती है।

एक ओर यह भारत को वैश्विक नेतृत्व, क्षेत्रीय प्रभाव और आर्थिक विस्तार के अवसर प्रदान करती है, दूसरी ओर चीन, सीमा विवाद, शक्ति–संघर्ष और वैश्विक संकटों जैसी चुनौतियाँ भी सामने रखती है।

भारत वैश्विक दक्षिण की आवाज़ के रूप में अपनी भूमिका को सुदृढ़ कर रहा है।

जलवायु न्याय, विकास, वैश्विक असमानता, संस्थागत सुधार और विकासशील देशों की भागीदारी जैसे मुद्दों पर भारत सक्रिय दृष्टिकोण अपनाता है।

इंडो–पैसिफिक क्षेत्र भारत की विदेश नीति का एक केंद्रीय रणनीतिक क्षेत्र बन चुका है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 03, March 2026

समुद्री सुरक्षा, व्यापारिक मार्ग, चीन की क्षेत्रीय सक्रियता और क्वाड सहयोग ने इस क्षेत्र के महत्व को और बढ़ाया है।

भारत–अमेरिका संबंधों में सामरिक, तकनीकी और आर्थिक सहयोग का विस्तार भारत की विदेश नीति की नई दिशा को दर्शाता है।

यह संबंध भारत के वैश्विक शक्ति–संतुलन में बढ़ती भूमिका को मजबूत करते हैं।

भारत–रूस संबंध भारत की विदेश नीति में निरंतरता और सामरिक संतुलन के प्रतीक हैं।

वैश्विक परिस्थितियों के परिवर्तन के बावजूद भारत ने रूस के साथ अपने ऐतिहासिक सामरिक संबंधों को बनाए रखा है।

भारत–चीन संबंध भारत की विदेश नीति की सबसे जटिल चुनौतियों में से एक हैं।

सीमा विवाद, क्षेत्रीय प्रतिस्पर्धा और भू–राजनीतिक तनाव भारत की सुरक्षा–नीति और विदेश नीति दोनों को प्रभावित करते हैं।

भारत की विदेश नीति में आर्थिक कूटनीति और ऊर्जा सुरक्षा का महत्व निरंतर बढ़ रहा है।

व्यापार, निवेश, प्रौद्योगिकी, आपूर्ति श्रृंखला, ऊर्जा संसाधन और वैश्विक बाज़ार से जुड़े हित अब विदेश नीति के महत्वपूर्ण घटक बन गए हैं।

बहुपक्षीय मंचों पर भारत की सक्रियता उसकी वैश्विक महत्वाकांक्षा और उत्तरदायित्व दोनों को व्यक्त करती है।

जी–20, ब्रिक्स, एससीओ, संयुक्त राष्ट्र और अन्य मंचों पर भारत की भागीदारी यह दर्शाती है कि वह वैश्विक शासन में बड़ी भूमिका चाहता है।

भारत की विदेश नीति आदर्शवाद और यथार्थवाद के संतुलन पर आधारित है।

भारत एक ओर विश्व शांति, न्याय और सहयोग की बात करता है, दूसरी ओर अपने राष्ट्रीय हितों, सुरक्षा और सामरिक स्थिति को प्राथमिकता देता है।

बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में भारत एक संभावित निर्णायक शक्ति के रूप में उभर रहा है।

उसकी जनसंख्या, अर्थव्यवस्था, भू–राजनीतिक स्थिति, लोकतांत्रिक संरचना और कूटनीतिक सक्रियता उसे विश्व राजनीति में महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करती है।

निष्कर्ष– "भारत की विदेश नीति और बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था" विषय के अध्ययन से यह स्पष्ट रूप से प्रतिपादित होता है कि समकालीन विश्व राजनीति एक गहरे संरचनात्मक परिवर्तन के दौर से गुजर रही है। शीत युद्धोत्तर एकध्रुवीय व्यवस्था, जिसमें संयुक्त राज्य अमेरिका की प्रधानता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती थी, अब क्रमशः बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में परिवर्तित हो रही है। इस नई व्यवस्था में शक्ति का वितरण अनेक केंद्रों में विभाजित हो रहा है और अंतरराष्ट्रीय संबंधों का स्वरूप अधिक जटिल, प्रतिस्पर्धी, अंतर्निर्भर तथा बहुआयामी बनता जा रहा है। ऐसे परिवर्तित वैश्विक परिदृश्य में भारत की विदेश नीति का महत्व असाधारण रूप से बढ़ गया है, क्योंकि भारत अब केवल एक क्षेत्रीय शक्ति नहीं, बल्कि एक उभरती हुई वैश्विक शक्ति के रूप में अपनी भूमिका का विस्तार कर रहा है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 03, March 2026

अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि भारत की विदेश नीति में समय के साथ एक उल्लेखनीय परिवर्तन आया है। स्वतंत्रता–प्राप्ति के बाद भारत की विदेश नीति के केंद्र में गुटनिरपेक्षता, पंचशील, शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व, उपनिवेशवाद–विरोध और विकासशील देशों के साथ एकजुटता जैसे सिद्धांत थे। इन सिद्धांतों ने भारत को नैतिक वैधता, कूटनीतिक पहचान और अंतरराष्ट्रीय सम्मान प्रदान किया। किंतु इक्कीसवीं सदी में वैश्विक शक्ति–संतुलन, आर्थिक परस्परता, सामरिक प्रतिस्पर्धा और भू–राजनीतिक चुनौतियों के बढ़ते प्रभाव ने भारत को अपनी विदेश नीति को अधिक व्यवहारिक, लचीला, बहुआयामी और हित–आधारित रूप में विकसित करने के लिए प्रेरित किया। इस प्रकार भारत की विदेश नीति में पारंपरिक गुटनिरपेक्षता से आगे बढ़कर "सामरिक स्वायत्तता" और "बहु–संरेखण" का स्पष्ट उभार दिखाई देता है।

यह भी स्पष्ट होता है कि भारत की विदेश नीति आज किसी एक शक्ति–गुट के साथ पूर्ण संरेखण पर आधारित नहीं है। इसके विपरीत, भारत विभिन्न वैश्विक और क्षेत्रीय शक्तियों के साथ अपने राष्ट्रीय हितों के अनुरूप संतुलित संबंध स्थापित कर रहा है। अमेरिका के साथ सामरिक, तकनीकी और आर्थिक सहयोग; रूस के साथ रक्षा और ऊर्जा संबंध; यूरोपीय संघ के साथ व्यापारिक एवं तकनीकी संवाद; जापान और आसियान के साथ क्षेत्रीय सहयोग; तथा ब्रिक्स, एससीओ, जी–20 और क्वाड जैसे मंचों पर समानांतर सक्रियताकृये सभी संकेत करते हैं कि भारत की विदेश नीति अब बहुस्तरीय, संतुलनकारी और परिस्थितिजन्य यथार्थवाद पर आधारित है। यह नीति भारत को न केवल अंतरराष्ट्रीय राजनीति में लचीलापन प्रदान करती है, बल्कि बदलते वैश्विक समीकरणों में स्वतंत्र निर्णय–क्षमता भी सुनिश्चित करती है।

अध्ययन का एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह भी है कि बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था भारत के लिए केवल अवसरों का क्षेत्र नहीं, बल्कि गंभीर चुनौतियों का भी क्षेत्र है। एक ओर यह व्यवस्था भारत को वैश्विक नेतृत्व, वैश्विक दक्षिण के प्रतिनिधित्व, आर्थिक विस्तार, तकनीकी सहयोग और बहुपक्षीय मंचों पर प्रभाव बढ़ाने का अवसर देती है; दूसरी ओर चीन का उदय, सीमा विवाद, हिंद–प्रशांत क्षेत्र की सामरिक प्रतिस्पर्धा, आतंकवाद, ऊर्जा सुरक्षा, आपूर्ति श्रृंखला संकट और क्षेत्रीय अस्थिरता जैसी चुनौतियाँ भारत की विदेश नीति को अधिक जटिल बनाती हैं। अतः भारत की विदेश नीति की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि वह आदर्शवाद और यथार्थवाद, सिद्धांत और व्यवहार, नैतिकता और राष्ट्रीय हित इन सभी के बीच कितना संतुलन स्थापित कर पाती है।

यह शोध यह भी स्थापित करता है कि समकालीन विदेश नीति में भारत की भूमिका केवल प्रतिक्रियात्मक नहीं रह गई है। भारत अब अंतरराष्ट्रीय घटनाओं पर प्रतिक्रिया देने वाला राष्ट्र भर नहीं, बल्कि वैश्विक विमर्श को आकार देने का प्रयास करने वाला राष्ट्र बनता जा रहा है। वैश्विक दक्षिण की आवाज़ को सशक्त करना, जलवायु न्याय पर संतुलित दृष्टिकोण रखना, संयुक्त राष्ट्र सुधार की मांग करना, जी–20 के माध्यम से विकासोन्मुख एजेंडा को आगे बढ़ाना, तथा समुद्री सुरक्षा, आपदा प्रबंधन और विकास–साझेदारी के क्षेत्रों में सक्रिय रहना ये सभी संकेत करते हैं कि भारत अपनी विदेश नीति को व्यापक वैश्विक जिम्मेदारी से जोड़ रहा है। इस दृष्टि से भारत केवल एक उभरती शक्ति नहीं, बल्कि एक उत्तरदायी शक्ति के रूप में भी स्वयं को प्रस्तुत कर रहा है।

इस अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि भारत की विदेश नीति में क्षेत्रीय आयाम का विशेष महत्व है। दक्षिण एशिया भारत की कूटनीतिक प्राथमिकताओं का स्वाभाविक क्षेत्र है, जबकि हिंद महासागर और इंडो–पैसिफिक उसकी सामरिक संवेदनशीलता के केंद्रीय क्षेत्र बन चुके हैं। "पड़ोसी प्रथम", "सागर", "एक्ट

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 03, March 2026

ईस्ट", तथा इंडो–पैसिफिक में सक्रिय भागीदारी जैसी नीतियाँ यह प्रदर्शित करती हैं कि भारत अपनी विदेश नीति को केवल वैश्विक शक्ति–संतुलन से नहीं, बल्कि अपने निकटवर्ती भू–राजनीतिक और समुद्री परिवेश से भी गहराई से जोड़कर देखता है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि भारत की विदेश नीति का वास्तविक स्वरूप क्षेत्रीय और वैश्विककृदोनों स्तरों पर एक साथ कार्य करता है।

अंततः प्रस्तुत अध्ययन यह सिद्ध करता है कि बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में भारत की विदेश नीति एक संक्रमणशील किंतु सुदृढ़ दिशा में अग्रसर है। यह विदेश नीति न तो पूर्णतः अतीत के सिद्धांतों से विमुख है और न ही बिना किसी नैतिक आधार के केवल शक्ति–राजनीति पर आधारित है। इसके भीतर स्वतंत्रता–प्राप्ति के बाद विकसित आदर्शवादी तत्वों की छाया भी मौजूद है और समकालीन यथार्थवादी आवश्यकताओं की स्पष्ट उपस्थिति भी। यही द्विस्तरीय प्रकृति भारत की विदेश नीति को विशिष्ट बनाती है।

इसलिए यह कहा जा सकता है कि बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था भारत के लिए एक ऐतिहासिक अवसर है, बशर्ते वह अपनी सामरिक स्वायत्तता, आर्थिक क्षमता, कूटनीतिक सक्रियता, क्षेत्रीय नेतृत्व और वैश्विक उत्तरदायित्व के बीच संतुलन बनाए रख सके। यदि भारत अपनी विदेश नीति में दीर्घकालिक दृष्टि, नीतिगत स्पष्टता, रणनीतिक धैर्य और संस्थागत क्षमता का विकास करता है, तो वह भविष्य की विश्व राजनीति में केवल एक सहभागी शक्ति नहीं, बल्कि एक प्रभावशाली, उत्तरदायी और निर्णायक शक्ति के रूप में स्थापित हो सकता है। इसी में भारत की विदेश नीति की वास्तविक सफलता और बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में उसकी सार्थक भूमिका निहित है।

अनुशंसाएँ –

1 भारत को अपनी सामरिक स्वायत्तता को और अधिक संस्थागत रूप देना चाहिए, ताकि बदलती वैश्विक परिस्थितियों में वह स्वतंत्र और दीर्घकालिक निर्णय लेने में सक्षम रहे।
2 बहु–संरेखण की नीति को स्पष्ट रणनीतिक ढाँचे के साथ आगे बढ़ाया जाना चाहिए, जिससे विभिन्न वैश्विक शक्तियों के साथ संबंधों में संतुलन बना रहे और नीतिगत अस्पष्टता कम हो।
3 भारत को इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में अपनी समुद्री और कूटनीतिक उपस्थिति को और सशक्त करना चाहिए, क्योंकि यह क्षेत्र उसकी सुरक्षा, व्यापार और वैश्विक रणनीतिक स्थिति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।
4 भारत को चीन के संदर्भ में दीर्घकालिक, संयमित और बहुस्तरीय रणनीति विकसित करनी चाहिए, जिसमें सीमा सुरक्षा, आर्थिक हित, क्षेत्रीय सहयोग और वैश्विक संतुलन सभी को समाहित किया जाए।
5 दक्षिण एशिया में भारत को पड़ोसी देशों के साथ विश्वास, सहयोग और विकास–आधारित कूटनीति को प्राथमिकता देनी चाहिए, ताकि क्षेत्रीय स्थिरता और भारत की नेतृत्वकारी भूमिका मजबूत हो।
6 भारत को वैश्विक दक्षिण के मुद्दों जैसे जलवायु न्याय, विकास वित्त, खाद्य सुरक्षा और स्वास्थ्य सहयोग पर अपने नेतृत्व को और प्रभावी बनाना चाहिए, जिससे उसकी नैतिक और कूटनीतिक प्रतिष्ठा बढ़े।
7 विदेश नीति में आर्थिक कूटनीति को और अधिक महत्व दिया जाना चाहिए, विशेषकर निवेश, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, ऊर्जा संसाधन, आपूर्ति श्रृंखला और व्यापारिक साझेदारियों के क्षेत्रों में।
8 भारत को रक्षा–आधुनिकीकरण और स्वदेशी सामरिक क्षमता निर्माण पर विशेष बल देना चाहिए, ताकि विदेश नीति और राष्ट्रीय सुरक्षा के बीच बेहतर तालमेल स्थापित हो सके।
9 बहुपक्षीय मंचों पर भारत को संयुक्त राष्ट्र सुधार, वैश्विक संस्थागत संतुलन और न्यायपूर्ण प्रतिनिधित्व के प्रश्न पर अधिक सक्रिय और संगठित प्रयास करने चाहिए।

10 विदेश नीति निर्माण में शोध संस्थानों, विश्वविद्यालयों और रणनीतिक अध्ययन केंद्रों की भागीदारी बढ़ाई जानी चाहिए, ताकि नीति–निर्माण अधिक तथ्याधारित, दूरदर्शी और अकादमिक रूप से समर्थित हो।

11 हिंदी सहित भारतीय भाषाओं में विदेश नीति और अंतरराष्ट्रीय संबंधों पर अधिक उच्चस्तरीय शोध को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए, जिससे व्यापक बौद्धिक आधार विकसित हो और विषय का लोकतंत्रीकरण हो।

12 भारत को डिजिटल कूटनीति, तकनीकी साझेदारी और साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में अपनी वैश्विक क्षमता को बढ़ाना चाहिए, क्योंकि आधुनिक विश्व राजनीति में प्रौद्योगिकी एक निर्णायक शक्ति बन चुकी है।

13 विदेश नीति के क्रियान्वयन में दीर्घकालिक राष्ट्रीय हितों, क्षेत्रीय दायित्वों और वैश्विक उत्तरदायित्वों के बीच संतुलित दृष्टिकोण अपनाया जाना चाहिए, ताकि भारत बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में एक जिम्मेदार, प्रभावशाली और स्थायी शक्ति के रूप में स्थापित हो सके।

संदर्भ सूची–

1. **Jaishankar, S.** The India Way: Strategies for an Uncertain World. HarperCollins Publishers India, 2020, ISBN: 9789390163878.

2. **Jaishankar, S.** Why Bharat Matters. Rupa Publications India, 2024, ISBN: 9789355202925.

3. **Sikri, Rajiv.** Challenge and Strategy: Rethinking India's Foreign Policy. SAGE Publications India, 2009, ISBN: 9788132104292.

4. **Mohan, C. Raja.** Crossing the Rubicon: The Shaping of India's New Foreign Policy. Viking/Penguin Books India, 2003, ISBN: 9780670040575.

5. **Mohan, C. Raja.** Modi's World: Expanding India's Sphere of Influence. HarperCollins India, 2015, ISBN: 9789351772033.

6. **Dixit, J. N.** India's Foreign Policy and Its Neighbours. Gyan Publishing House, 2001, ISBN: 9788121207263.

7. **Dixit, J. N.** My South Block Years: Memoirs of a Foreign Secretary. UBS Publishers' Distributors, 2004, ISBN: 9788174767578.

8. **Dutt, V. P.** India's Foreign Policy in a Changing World. Vikas Publishing House, 2009, ISBN: 9788125936633.

9. **Appadorai, A.** Domestic Roots of India's Foreign Policy 1947–1972. Oxford University Press, 1981, ISBN: 9780195612547.

10. **Rajan, M. S.** India in World Affairs. Konark Publishers, 1993, ISBN: 9788122003536.

11. **Tharoor, Shashi.** Pax Indica: India and the World of the 21st Century. Penguin/Allen Lane India, 2012, ISBN: 9780670085200.

12. **Pant, Harsh V.** Indian Foreign Policy: An Overview. Manchester University Press, 2016, ISBN: 9780719091797.

13. **Pant, Harsh V. (ed.).** India's Foreign Policy: Retrospect and Prospect. Orient BlackSwan, 2010, ISBN: 9788125040842.

14. **Karnad, Bharat.** Why India Is Not a Great Power (Yet). Oxford University Press, 2015, ISBN: 9780199459223.

15. **Kapur, Ashok.** India: From Regional to World Power. Routledge, 2006, ISBN: 9780415392952.

16. **Hall, Ian.** Modi and the Reinvention of Indian Foreign Policy. Bristol University Press, 2019, ISBN: 9781529202823.

17. **Narlikar, Amrita.** Poverty Narratives and Power Paradoxes in International Trade Negotiations and Beyond. Cambridge University Press, 2020, ISBN: 9781108837545.

18. **Muni, S. D.** India's Foreign Policy: The Democracy Dimension. Cambridge University Press, 2009, ISBN: 9780521766845.

19. **Ganguly, Sumit.** Indian Foreign Policy: Retrospect and Prospect. Oxford University Press, 2010, ISBN: 9780198063513.

20. **Ganguly, Sumit and Pardesi, Manjeet S.** Explaining Sixty Years of India's Foreign Policy. Routledge, 2009, ISBN: 9780415774260.

21. **Malone, David M.** Does the Elephant Dance? Contemporary Indian Foreign Policy. Oxford University Press, 2011, ISBN: 9780198077947.

22. **Kumar, Mohan.** India's Moment: Changing Power Equations Around the World. HarperCollins India, 2023, ISBN: 9789356992689.

23. **Singh, Sinderpal (ed.).** India in South Asia: Domestic Identity Politics and Foreign Policy from Nehru to the BJP. Routledge, 2015, ISBN: 9781138817449.